5 दशहरा

हमारा देश त्योहारों का देश है। होली, दीपावली, रक्षाबंधन, ईद, क्रिसमस, दशहरा आदि त्योहार संपूर्ण भारत में आनंद और उल्लास के साथ मनाए जाते हैं।

दशहरा हमारे देश का प्रसिद्ध त्योहार है। यह त्योहार आश्विन माह में शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है। यह वर्षा की समाप्ति तथा शरद के आगमन का सूचक है। दशहरे से पहले नौ दिन की अवधि को 'नवरात्र' कहते हैं। यह शारदीय नवरात्र कहलाते हैं। इन नौ दिनों में बड़ी धूमधाम से माँ दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। प्रथम दिन कलश स्थापना का होता है एवं अंतिम अर्थात् दसवां दिन विजयादशमी के रूप में मनाया जाता है।

हमारे देश में विजयादशमी के पर्व का इतिहास बहुत पुराना है। निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि यह पर्व कब से मनाया जाता रहा है। इस पर्व के साथ कई पौराणिक कथाएँ जुड़ी हुई हैं।

ऐसा माना जाता है कि सर्वप्रथम अयोध्या के राजा राम ने शारदीय नवरात्र प्रारम्भ की थी। उन्होंने लंका विजय के समय समुद्र तट पर नौ दिन तक भगवती (विजया) की आराधना की थी। भगवती की कृपा से उनमें अपार शक्ति का संचार हुआ। तत्पश्चात् दशमी के दिन लंका के राजा राक्षसराज रावण का वध करके एक अन्यायी से संसार को मुक्ति दिलाई थी। इसलिए दशहरे को विजयादशमी भी कहा जाता है। यह भी माना जाता है कि इस तिथि को वीर पांडवों ने अन्यायी कौरवों पर विजय प्राप्त की थी तथा इसी तिथि को देवताओं के राजा इंद्र ने वृत्तासुर नाम के दैत्य को हराया था। इस दशमी तिथि को 'विजय' नामक मुहूर्त होता है, जो सम्पूर्ण कार्यों में सिद्धिदायक होता है। अतः प्राचीनकाल में राजा लोग इसी दिन अपनी विजय यात्रा आरम्भ करते थे। सरस्वती–पूजा, शस्त्र–पूजा, दुर्गा–विसर्जन,

नवरात्र–पारायण तथा विजय–प्रयाण इस पर्व के महान कर्म हैं। शास्त्रकारों के अनुसार इस दिन शमी वृक्ष (खेजड़ी) का पूजन किया जाता है। लोगों का विश्वास है कि शमी वृक्ष की पूजा से दृढ़ता और तेजस्विता प्राप्त होती है। इस दिन नीलकंठ पक्षी के दर्शन को भी शुभ माना जाता है।

विजयादशमी के पर्व का सबसे बड़ा आकर्षण 'रामलीला' है। आश्विन माह में शुक्लपक्ष प्रारम्भ होते ही जगह–जगह रामलीला होने लगती हैं और दशमी के दिन रावण वध के साथ उसका समापन होता है।

हमारे देश में रामलीला का इतना प्रचार है कि छोटे–बड़े, शहरों–नगरों के अतिरिक्त गाँवों में भी लोग बड़े उत्साह से रामलीला का आयोजन करते हैं। बड़े–बड़े शहरों में प्रसिद्ध रामलीला–मंडलियों द्वारा रामलीला की जाती है। गाँवों में वहाँ के लोग स्वयं अभिनेता बनकर रामलीला करते हैं।

रामलीला का प्रदर्शन प्रायः तुलसीदासजी के प्रसिद्ध ग्रंथ रामचरितमानस के आधार पर होता है। राम–जन्म, सीता–स्वयंवर, लक्ष्मण–परशुराम संवाद, सीता–हरण, हनुमान द्वारा लंका–दहन, लक्ष्मण–मेघनाद युद्ध रामलीला के

आकर्षक प्रसंग होते हैं। रामलीला के दिनों की चहल–पहल देखने लायक होती है। देर रात तक दर्शकों का आना–जाना लगा रहता है।

विजयादशमी को मेला लगता है। दोपहर से ही सड़कों पर रंग–बिरंगी पोशाक पहने महिलाएँ, बच्चे, बूढ़े, जवान सभी मेले में जाते दिखाई देते हैं। इस दिन बाजार की रौनक ही बदल जाती है। कई प्रकार की दुकानें, झूले, डोलर सज जाते हैं।

जहाँ विजयादशमी का मेला लगता है वहीं एक तरफ मैदान में लंका नगरी का परकोटा तथा रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाद के पुतलों को स्थापित किया जाता है। रावण का रूप विशाल और विकराल होता है। पुतला बनाने में लकड़ियाँ, बाँस की खपच्चियाँ, रंग–बिरंगे कागज और पटाखे आदि काम में लिए जाते हैं।

इस दिन कई जगह गाँव में जुलूस भी निकाला जाता है। जुलूस में राम, लक्ष्मण, हनुमान तथा वानर सेना की झाँकियाँ सजी होती हैं। यह जुलूस मुख्य मार्गों से होता हुआ मैदान में पहुँचता है।

सूर्यास्त के समय राम द्वारा रावण व कुंभकर्ण के पुतलों को तथा लक्ष्मण द्वारा मेघनाद के पुतले को जलाया जाता है।

ये पुतले धूँ–धूँ करके जलने लगते हैं। इसमें भरे पटाखे छूटने लगते हैं। इस दृश्य को देखकर सब लोग रामचन्द्र की जय का उद्घोष करते हुए प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। इस प्रकार यह त्योहार अन्याय पर न्याय की, असत्य पर सत्य की और अधर्म पर धर्म की विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

अत्याचारी रावण को प्रतिवर्ष जलते हुए देखकर हमारे मन में यह बात दृढ़ हो जाती है कि अत्याचारी का न केवल अंत ही बुरा होता है वरन् आने वाली पीढ़ियाँ भी उनके कुकृत्यों को कभी क्षमा नहीं करती। विजयादशमी मानव जाति का विजय पर्व है।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

उल्लास	–	खुशी, उमंग
पौराणिक	–	पुराण संबंधी
अपार	–	असीम
तेजस्विता	–	तेजस्वी होने का गुण
प्रदर्शन	–	दिखाना या दिखलाना
उद्घोष	–	घोषणा करना, ऊँची आवाज में कहना
कुकृत्य	–	बुरे कार्य
विसर्जन	–	समाप्ति, समापन
शमी वृक्ष	–	खेजड़ी का वृक्ष

उच्चारण के लिए

कुकृत्य, सम्पूर्ण, कुम्भकर्ण, अयोध्या, वृत्तासुर, सिद्धि, आकर्षण, युद्ध, दैत्य, तेजस्विता

सोचें और बताएँ

1. नवरात्र के बाद दसवें दिन कौनसा त्योहार मनाया जाता है ?
2. इस दिन कौनसे वृक्ष की पूजा की जाती है ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर करें–

(अ) दशहरे से पहले नौ दिनों को ––––––––––––––– कहते हैं ।

(क्रिसमस / नवरात्र)

(ब) राजा इन्द्र ने ––––––––––– नाम के दैत्य को हराया था।

(वृत्तासुर / कुम्भकर्ण)

(स) इस दिन––––––––– पक्षी के दर्शन को शुभ माना जाता है ।

(कोयल / नीलंकठ)

2. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें

(क) दशहरा मनाया जाता है–

(अ) कार्तिक माह में (ब) श्रावण माह में

(स) आश्विन माह में (द) ज्येष्ठ माह में ( )

(ख) शस्त्र पूजा होती है–

(अ) दीपावली के दिन (ब) ईद के दिन

(स) क्रिसमस के दिन (द) दशहरे के दिन ( )

3. हमारे देश के प्रमुख त्योहार कौन–कौनसे हैं ?

4. दशहरा क्यों मनाया जाता हैं ?

5. दशहरे के दिन किस–किसके पुतले जलाए जाते हैं ?

6. दशहरे को विजयादशमी क्यों कहते हैं ?

भाषा की बात

- पाठ में 'न्याय' शब्द आया है, इसमें 'अ' जोड़कर 'अन्याय' शब्द बनता है। ऐसे ही नीचे लिखे शब्दों में 'अ' जोड़कर नए शब्द लिखें।

सत्य ____________

धर्म ____________

प्रसन्न ____________

- पाठ में "राजा" तथा "देवता" जैसे शब्द आए हैं। 'राजा' तथा 'देवता' शब्द दोनों ही पुरुष जाति का बोध कराते हैं। जिन शब्दों से पुरुष या स्त्री जाति का बोध हो उसे लिंग कहते हैं। निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द लिखें–

राजा – रानी

शेर – ____________

देवता – ____________

पिता – ____________

पुत्र	–	______________
भाई	–	______________

यह भी करें

- आपके यहाँ मनाए जाने वाले त्योहारों की सूची बनाएँ, तथा इनको मनाने का तिथि लिखें

त्योहार का नाम	मनाए जाने की तिथि

- आपके यहाँ कौनसा मेला लगता है ? उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

> पराजय से सत्याग्रही को निराशा नहीं होती, बल्कि कार्यक्षमता और लगन बढ़ती है।
>
> – महात्मा गाँधी